महामत कहे मेहेर मोमिनों, हकें करी वास्ते तुम।
कौन देवे इत सुख बका, बिना इन खसम।। ४४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने तुम्हारे वास्ते यह मेहर की है। धनी के बिना ऐसे खेल में अखण्ड सुख और कौन दे सकता है?

॥ प्रकरण ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ ४४२ ॥

कलस पंच रोसनी का

रे रूह करे ना कछू अपनी, के तूं उरझी उमत माहें।
उमर गई गुन सिफत में, तोहे अजूं इस्क आया नाहें।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी आत्मा! तू कब तक सुन्दरसाथ के वास्ते उलझी रहेगी? जगाने में लगी रहेगी? कुछ अपने लिए भी कर। तेरी आयु श्री राजजी महाराज के गुण और महिमा गाते-गाते बीत रही है फिर भी तुझे अभी तक इश्क नहीं आया।

हक सिर पर इन विध खड़े, देखत ना हक तरफ।
जो स्वाद लगे मेहेबूब का, तो मुख ना निकसे एक हरफ।। २ ।।

श्री राजजी महाराज किस तरह से तेरे ऊपर मेहरबानी कर रहे हैं, फिर भी तू उनकी तरफ नहीं देख रही है। यदि तुझे लाड़ले मेहबूब का सच्चा स्वाद मिल जाए, तो तेरी जबान से एक शब्द भी बाहर नहीं निकलेगा।

बात करत तूं हक की, जो रूहों सों गुफ्तगोए।
इन बका की खिलवत से, कछू तोको भी नसीहत होए।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज की बातें जो तू रूहों को बता रही है, इन अखण्ड घर की बातों से कुछ तू भी तो नसीहत ले ले।

ए सब्द कहे तैं नींद में, के सुपने करत स्वाल।
के जवाब तेरे जागते, कछू देखे ना अपना हाल।। ४ ।।

यह वाणी तू नींद में कह रही है या सपने में प्रश्न कर रही है या जागृत अवस्था में जवाब दे रही है? तू अपना हाल क्यों नहीं देखती?

कैसी बात करत है, किन ठौर की बात।
तूं कौन गुफ्तगोए किन की, ना विचारत हक जात।। ५ ।।

यह तू कैसी बात और कहां की बात करती है? तू कौन है और तू किसकी बात करती है? तेरी इस बात पर मोमिन (श्री राजजी महाराज के निसबती) विचार क्यों नहीं करते?

ए बात ना होए कबूं नींद में, और सुपने भी ना एह।
जो तूं बात करे जागते, तो तेरी क्यों रहे झूठी देह।। ६ ।।

यह घर की बातें नींद और सपने में नहीं होतीं। यदि तू जागृत अवस्था में बात कर रही है, तो तेरा झूठा तन नहीं रहना चाहिए।

Nijanand App

ए बात ना नींद सुपन की, जो तूं बात करे जाग्रत।
तो कौल फैल ना हाल कोई, रहे ना देह गत मत।।७।।

यह बात नींद और सपने की नहीं है। यदि यह बातें जागृत अवस्था की हैं तो तेरी कहनी, करनी और रहनी, तन और बुद्धि कुछ नहीं रहना चाहिए।

जो ए बात करे जागते, तो तोहे नींद आवे क्यों फेर।
नैनों पल क्यों लेवहीं, क्यों बोले और बेर।।८।।

यदि यह बातें तू जागृत अवस्था में करती है तो तुझे दुबारा नींद क्यों आती है। नयनों के ऊपर पलक क्यों गिराती है? दूसरी बार मुख से शब्द कैसे निकलते हैं, अर्थात् तू मर क्यों नहीं जाती?

के तूं बुध रहित है, के तूं बोलत बेसहूर।
बेसहूर क्यों कहे सके, ए हक का गुझ जहूर।।९।।

क्या तेरे में बुद्धि नहीं है या तू बेहोशी में बोल रही है? अगर तुझे बेहोशी में मान लिया जाए तो पारब्रह्म के दिल की छिपी बातें कैसे करती है?

अब तेहेकीक एही होत है, तोहे बोलावत हुकम।
हुकमें वजूद रेहेत है, और हुकमें दिया इलम।।१०।।

अब यह निश्चित हो गया कि तुझे हुकम बुलवा रहा है। हुकम का कोई तन नहीं है। हुकम ने ही तुम्हें तारतम ज्ञान दिया।

आए इलम हक बका के, तब देह रहे क्यों कर।
बेसक हुए हक अर्स सों, सो दम रहे न हक बिगर।।११।।

जब श्री राजजी महाराज का अखण्ड तारतम ज्ञान आ गया, तो यह झूठा तन कैसे खड़ा है? यदि श्री राजजी महाराज के स्वरूप से और परमधाम से संशय रहित हो गये हो तो तुम्हें श्री राजजी महाराज से एक क्षण भी अलग नहीं रहना चाहिए।

अर्स हक की बेसकी, पाई जरे जरे जेती।
ज्यों जाग के केहे हकीकत, और देह बोलत सुपने की।।१२।।

तारतम ज्ञान से तुम्हें परमधाम की तथा श्री राजजी महाराज की हकीकत के जर्रे-जर्रे की बेशक जानकारी हो गई है। जैसे कोई जागकर हकीकत बता रहा हो, उसी तरह से तेरे यह सपने का तन बोल रहा है।

बड़ा होत है अचरज, बात जाग्रत माहें सुपना।
जब कछू होवे जाग्रत, तब तो ए आगे ही से फना।।१३।।

मुझे बड़ी हैरानी होती है जब जागृत की बातें सपने में करते हैं। जागृत हो जाने पर तो सपना पहले ही नष्ट हो जाता है।

जो विचार विचार विचारिए, तो अनहोनी हक करत।
इत बल किसी का नहीं, दिल आवे सो देखावत।।१४।।

यदि ध्यान से विचार करके देखें तो यह अनहोनी बात श्री राजजी महाराज कर रहे हैं। जहां किसी की ताकत नहीं चलती, पर उनके दिल में जैसा आता है, वैसा दिखाते हैं।

Nijanand App

अर्स की रूहों को सुपना, देखो कैसे ए आया।
ए भी हकें जान्या त्यों किया, अपने दिल का चाह्या।। १५ ।।

परमधाम की रूहो को देखो यह सपना कैसे आ गया? क्योंकि वह तो परमधाम में सदा जागृत अवस्था में हैं। यह भी श्री राजजी ने जैसा अच्छा जाना वैसा अपने मन माफिक किया।

देह रखी सुपन की, और सक ना जागे में।
ए भी हकें जान्या त्यों किया, विचार देखो दिल में।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज ने तारतम ज्ञान से मुझे जागृत भी कर दिया है और सपने के तन को कायम भी कर रखा है। यह दिल से विचार करके देखो तो श्री राजजी महाराज ने जैसा मन में चाहा, वैसा किया।

आप अर्स देखाइया, ज्यों देखिए नींद उड़ाए।
जरा सक दिल ना रही, यों अर्स दिया बताए।। १७ ।।

उन्होंने अपने आप की पहचान कराई और घर को दिखाया, जैसे नींद समाप्त होने पर देखते हैं। अब मेरे दिल में जरा भी संशय नहीं रह गया। इस तरह से मुझे घर परमधाम दिखा दिया।

फेर देखो सुपन को, तो अजूं रह्या है लाग।
फरामोसी नींद ना गई, जानों किन ने देख्या जाग।। १८ ।।

जब स्वप्न की तरफ देखती हूं तो यह ब्रह्माण्ड ज्यों का त्यों खड़ा है। परमधाम में फरामोशी की नींद भी नहीं हटी तो फिर यहां जागृत होकर परमधाम को देखा किसने?

जो देखूं अर्स जागते, तो इत नाहीं जरा सक।
फेर देखूं तरफ सुपन की, तो यों ही खड़ा मुतलक।। १९ ।।

जब परमधाम की तरफ देखती हूं तो वह भी जैसा का तैसा अखण्ड है? फिर सपने की तरफ देखती हूं तो यह भी बेशक खड़ा है। यही हैरानी है।

ए बातें नूरजमाल की, इनमें कैसा तअजुब।
जनम लाख देखावें पल में, जानों ढ़ांप के खोली अब।। २० ।।

यह बातें समर्थ पूर्ण ब्रह्म श्री राजजी महाराज की हैं। इसमें हैरानी की कोई बात ही नहीं। वह एक पल में लाखों जन्म दिखा सकते हैं। वहां ऐसा लगेगा मानो पलक अभी खोली है।

एक खस-खस के दाने मिने, देखाए चौदे तबक।
तो कौन बात का अचरज, ऐसे देखावें हक।। २१ ।।

एक खसखस के दानें में यह चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड दिखा दिया (अर्थात् बहुत ही थोड़े में)। यह कोई हैरानी की बात नहीं है, क्योंकि श्री राजजी महाराज तो ऐसा दिखाया ही करते हैं।

ऐसी बातें हक की, इत कोई सक ल्याओ जिन।
देख दिन में ल्यावें रात को, और रात में ल्यावें दिन।। २२ ।।

श्री राजजी महाराज की लीलाओं में किसी प्रकार का संशय मत लाओ। वह दिन में रात और रात में दिन ला सकते हैं, अर्थात् परमधाम में बैठे-बैठे माया दिखा सकते हैं और खेल में बैठे-बैठे परमधाम दिखा सकते हैं।

Nijanand App

ऐसे खेल कई हक के, बैठे देखावें अर्स माहें।
रूह बकाएं लई देह नासूती, जो मुतलक कछुए नाहें।। २३ ।।

परमधाम में बैठे-बैठे ऐसे कई खेल श्री राजजी महाराज दिखाते हैं। फिर परमधाम की रूहों ने मृत्युलोक में माया के तन कैसे धारण किए, जो बेशक कुछ भी नहीं है।

तन ऐसा धर नासूत में, करी हक सों निसबत।
कजा चौदे तबक की, इन तन पे करावत।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज ने इस झूठे संसार में ब्रह्मसृष्टियों को झूठे तन धारण करवाए और फिर इन झूठे तनों से अपना सम्बन्ध बनाया। फिर इन्हें झूठे तनों से सारे संसार का न्याय कराकर बहिश्तें दिलवाते हैं।

ऐसी अचरज बातें हक की, क्यों कहूं झूठी जुबान।
कहूं इन तन का खसम, जो वाहेदत में सुभान।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज की ऐसी अद्‌भुत लीलाओं का ऐसी झूठी जबान से कैसे वर्णन करूं? मैं इस झूठे तन का धनी भी श्री राजजी महाराज को कह देती हूं।

दोस्त कहूं हक बका को, धर ऐसा झूठा तन।
निसबत तुमसों तो कहूं, जो देख्या बका वतन।। २६ ।।

ऐसा झूठा तन धारण कर मैं अखण्ड श्री राजजी महाराज को अपना दोस्त कहती हूं। हे धनी! मैं आपकी अंगना हूं। ऐसा मैं तब कहती हूं, क्योंकि मैंने यहां बैठे-बैठे अखण्ड घर परमधाम को देख लिया।

एह विध मैं केती कहूं, कौन अचरज इन।
कई बातें ऐसी हक की, जो विचार देखो रूह तन।। २७ ।।

यह हकीकत मैं कहां तक कहूं? इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है। यदि रूह के तन से विचार कर देखो तो श्री राजजी महाराज की ऐसी लीलाएं होती ही रहती हैं।

अब केहेती हों खसम को, तुम से कैसी चतुराए।
ए भी जानों त्यों करो, ऐसी बनी खेल में आए।। २८ ।।

अब श्री राजजी महाराज से कहती हूं, हे धनी! आपसे कैसी चालाकी। यह सब भी जैसा आप चाहें वैसा करें। खेल में हमारी तो ऐसी हालत हो गई है।

जेती बातें मैं कही, तिन सब में चतुराए।
ए चतुराई भी तुम दई, ना तो एक हरफ न काढ़्यो जाए।। २९ ।।

हे धनी! जितनी बातें मैंने कही हैं, इन सब में मेरी चतुराई नजर आती है। यह चतुराई भी आपकी कृपा से आई है। नहीं तो मेरे मुंह से एक शब्द भी ऐसा न निकलता।

एह बात रही हुकम पर, करें हक सांची सोए।
या राजी या दलगीर, ए हाथ खसम के दोए।। ३० ।।

अब आखिर में यह सारा मुद्दा तो श्री राजजी के हुकम पर ही आ गया। जो श्री राजजी महाराज करते हैं, वही सच है। हमें प्रसन्न रखना या दुःखी रखना यह सब उस प्रीतम के हाथ है।

Nijanand App

उमर तो सब चल गई, आया उठने का दिन।
या तो उठाओ हंसते, ज्यों जानो त्यों करो रूहन।।३१।।

संसार में हमारा सब समय समाप्त हो गया है। अब तो परमधाम में उठने का समय आ गया है। अब या तो रूहों को हंसते-हंसते उठाओ या फिर जैसा आप चाहो वैसा करो।

नींद आई हुकम सों, हुकमें हुआ सुपन।
हुकम से जागत हैं, एक जरा न हुकम बिन।।३२।।

हे धनी! आपके हुकम से ही फरामोशी की नींद आई और हुकम से ही स्वप्न आया। अब हुकम से ही जागते हैं। आपके हुकम के बिना और कुछ भी नहीं है।

हकें इलम ऐसा दिया, जो चौदे तबकों नाहें।
और नाहीं नूर मकान में, सो दिया मोहे सुपने माहें।।३३।।

हे राजजी महाराज! आपने जागृत बुद्धि की तारतम वाणी ऐसी दी जो यहां चौदह तबकों में नहीं है और न ही अक्षर धाम में ही है जो मुझे सपने के तन में दी।

ए इलम नूर जमाल बिना, दूजा कौन बकसत।
मुझ बिना किने ना पाइया, मेरी बेसक रूह जानत।।३४।।

यह जागृत बुद्धि की तारतम वाणी श्री राजजी महाराज के बिना दूसरा और कौन दे सकता है? यह मेरी आत्मा अच्छी तरह जानती है कि मेरे बिना यह जागृत बुद्धि का ज्ञान किसी को नहीं मिला।

या जानें एह मोमिन, जिन इलम पाया बेसक।
तिनों नीके कर चीन्ह्या, जिन बूझ लिया इस्क।।३५।।

या यह ब्रह्मसृष्टियां जानती हैं जिनको यह बेशक ज्ञान मिला है या जिन्होंने श्री राजजी महाराज के इश्क को समझ लिया है उन्होंने ही धनी को पूर्ण रूप से पहचाना है।

मोमिन तिन को जानियो, नूर-जमाल सों निसबत।
मेरी बेसक देसी साहेदी, जिनों पाई हक न्यामत।।३६।।

मोमिन उनको समझना जिनका सम्बन्ध श्री राजजी से है। वही मोमिन हैं जिन्हें श्री राजजी महाराज की यह न्यामत (तारतम ज्ञान) मिल गई है। वही मेरी गवाही देंगे।

अब इन ऊपर क्या बोलना, आगूं मेहेबूब तुम।
जिन विध जानो त्यों करो, दोऊ तन तले कदम।।३७।।

हे धनी! इसके ऊपर अब आपके सामने क्या कहूं? अब आप जैसा जानो वैसा करो। हमारे दोनों तन (आतम और परआतम) आपके चरणों के तले हैं।

जो हक के दिल में आइया, सो सब देख्या नीके कर।
जो देखाया इलमें, या देखाया नजर।।३८।।

श्री राजजी महाराज के दिल में जो बात आई वह हमने अच्छी तरह से देखी। चाहे उन्होंने इलम से दिखाया या यहां नजर से दिखाया।

Nijanand App

और जो हक के दिल में, बाकी होसी अब।
जो तुम देखाओगे, सो रूहें देखें हम सब।। ३९ ।।

और हे धनी! आपके दिल में और जो कुछ बाकी दिखाने को है उनमें जो तुम दिखाओगे वह हम यहां देखेंगे।

केहेना केहेलावना न रह्या, ऐसा तुम दिया इलम।
तुम बिना जरा है नहीं, ज्यों जानो त्यों करो खसम।। ४० ।।

हे श्री राजजी महाराज अब कुछ भी कहने कहलाने की बात नहीं रह गई। ऐसा जागृत बुद्धि का ज्ञान आपने दे दिया है। अब जैसा चाहो वैसा करो। आपके बिना कुछ है ही नहीं।

बोलिए सो सब बंधन, ए भी बोलावत तुम।
ए सहूर भी तुम देत हो, ज्यों जानो त्यों करो खसम।। ४१ ।।

यदि कुछ बोलती हूं तो बन्धन में पड़ती हूं। कहलवाते भी आप हो। यह सुध भी आप देते हो, इसलिए जैसा जानो वैसा करो।

खसम खसम तो केहेती हों, जानों खुदी रहे ना मुझ माहें।
गुनाह अपनी अंगना पर, बका में आवत नाहें।। ४२ ।।

'खसम खसम' इसलिए कहती हूं कि मेरे अन्दर अहं भाव न रह जाए, क्योंकि अखण्ड परमधाम में आपकी अंगना पर कोई दोष नहीं लग सकता।

ए भी इलम हकें दिया, मैं कहा कहूं खसम।
ठौर ना कोई बोलन की, बैठी हों तले कदम।। ४३ ।।

हे धनी! यह जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान भी आपने ही दिया है, इसलिए मैं अब क्या कहूं? मेरे बोलने का तो ठिकाना अब रहा ही नहीं। मैं तो आपके चरणों तले बैठी हूं।

खसम खसम तो केहेती हों, जो तुम देखाई निसबत।
भार भी तुम देओगे, तुम ही देओगे लज्जत।। ४४ ।।

हे श्री राजजी महाराज! आपने पहचान करा दी है कि मैं आपकी अंगना हूं, इसलिए 'खसम खसम' कहती हूं। अब इस अंगना को मान भी आप ही देंगे। जिम्मेदारी भी आप ही देंगे और खेल की लज्जत भी आप ही देंगे।

दोऊ तन तले कदम के, आतम परआतम।
इनमें सक कछू ना रही, यों कहे हक इलम।। ४५ ।।

हे श्री राजजी! हमारे दोनों तन (आतम का संसार में, परआतम का परमधाम में) आपके चरणों के तले हैं। इसमें अब कोई संशय नहीं। ऐसी समझ आपकी जागृत बुद्धि के ज्ञान से आ गई है।

सिखाओ चलाओ बोलाओ, सो सब हाथ हुकम।
सो इलमें बेसक करी, और कहा कहूं खसम।। ४६ ।।

अब आप हमें जो भी सिखाएं, जहां भी बुलाएं, यह सब आपके हुकम के हाथ में है। ऐसी बेशकी आपके जागृत बुद्धि के ज्ञान से हो गई है। अब हे धनी! इसके ऊपर क्या कहूं?

Nijanand App

अन्तर माहें बाहेर की, सब जानत हो तुम।
ए इलमें बेसक करी, अब कहा कहूं खसम।। ४७ ।।

हमारे अन्दर बाहर की सब हकीकत आप जानते हैं आपके ज्ञान ने हमें निःसन्देह बना दिया है। अब मैं आगे क्या कहूं?

साथ आए मेला मिलसी, सो सब हाथ हुकम।
ए सक इलमें ना रखी, अब कहा कहूं खसम।। ४८ ।।

सुन्दरसाथ आ जाएंगे तो मेला हो जाएगा। यह सब आपके हुकम के हाथ में है। यह सब संशय जागृत बुद्धि के ज्ञान ने मिटा दिए हैं। अब धनी! और क्या कहूं?

खेल कर उतारे खेल में, रूहें पोहोंची इन इलम।
इन बातों सक ना रही, कहा कहूं तुमें खसम।। ४९ ।।

आपने खेल बनाया है और आपने ही हमें खेल में उतारा है। आपके जागृत बुद्धि के ज्ञान से हम सब जान गए। अब इन सब बातों में कोई भी संशय नहीं रह गया। अब आपसे और क्या कहूं?

हुकमें पूरी सब उमेद, और बाकी हाथ हुकम।
ए इलमें बेसक करी, अब कहा कहूं खसम।। ५० ।।

आपके हुकम ने हमारी सब चाहना पूरी कर दी है। जो कुछ बाकी है तो वह आपके हुकम के हाथ है। यह आपके जागृत बुद्धि के ज्ञान ने निश्चित कर दिया है। अब और क्या कहूं?

दिन गए सो तुम जानत, बाकी भी जानत तुम।
जिन विध राखो त्यों रहूं, कहा कहूं खसम।। ५१ ।।

जो दिन बीत गए हैं वह सब आप जानते हैं। बाकी कैसे बीतेंगे, वह भी आप जानते हो। अब जिस तरह से आप रखोगे वैसे रहूंगी। अब इसके आगे और क्या कहूं?

ठौर और कोई ना रही, सो बेसक करी इलम।
ए बेवरा तुम कहावत, सो केहेती हों खसम।। ५२ ।।

आपके जागृत बुद्धि के ज्ञान ने ऐसा दृढ़ कर दिया है कि अब बोलने का कहीं ठिकाना नहीं रहा। अब जो तुम कहलवाते हो वही मैं कहती हूं।

चौदे तबक सिर मलकूत, ए तो कुरसी फरिस्तों अर्स।
इन सिर ला-मकान है, आगूं सब्द न चले निकस।। ५३ ।।

चौदह लोकों के ऊपर बैकुण्ठ है जो देवी-देवताओं का धाम है। उसके ऊपर निराकार है। इसके ऊपर वर्णन करने के लिए यहां के शब्द ही नहीं चल पाते।

फना तले ला मकान लग, आगूं नूर-मकान बका।
उतथें उतरे सो चढ़े, और चढ़ ना सके इत का।। ५४ ।।

निराकार के नीचे सारा जगत नाशवान है। आगे अक्षरधाम व परमधाम अखण्ड हैं। जो वहां से खेल में उतरे हैं, वही वापस वहां चढ़कर जाएंगे। इस माया के संसार का जीव वहां नहीं जा सकता।

Nijanand App

देख्या बेचून बेचगून को, और बेसबी बेनिमून।
निराकार देख्या ला निरंजन, ए बेसक पड़ी सब सुंन।।५५ ।।

कुरान में जिसे बेचून, बेचगून, बेसबी, बेनिमून कहा है, उसे हिन्दू शास्त्रों में शून्य, निर्गुण, निराकार और निरंजन कहा है। उन सबको हमने देख लिया है।

अव्वल इलमें देखाइया, आखिर बेसक इलम।
चौदे तबक देखे नूर लग, ठौर नहीं बिना तेरे तले कदम।।५६ ।।

आपके जागृत बुद्धि के ज्ञान ने इन सब का आदि और अन्त बता दिया है। चौदह लोक देखे तथा अक्षरधाम तक नजर दौड़ाई, किन्तु आपके चरणों के बिना कहीं ठिकाना नहीं है।

और नजीक न कोई फरिस्ता, कोई नाहीं इन्सान और।
हादी रूहें तेरे कदम तले, कोई और न पोहोंचे इन ठौर।।५७ ।।

आपके चरणों तक न तो कोई देवी-देवता, न कोई इन्सान पहुंच पाता है। श्यामा महारानी और रूहें ही तुम्हारे चरणों के तले हैं।

गिरो नजीकी फरिस्ते, इनका नूर-मकान।
ए मलकूत में रेहे ना सकें, चढ़ ना सकें लाहूत आसमान।।५८ ।।

ब्रह्मसृष्टि के नजदीक रहने वाली ईश्वरीसृष्टि (फरिश्ते) हैं जिनका घर अक्षरधाम है। यह न बैकुण्ठ (क्षर ब्रह्माण्ड) में रह सकते हैं और न चौथे आसमान (परमधाम) जा सकते हैं।

नूर-मकान का खावंद, जिनके होत एक पल।
कोट ब्रह्मांड ऐसे होए के, वाही खिन में जात हैं चल।।५९ ।।

अक्षरधाम के मालिक अक्षर ब्रह्म हैं। इनके एक पल में ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं।

इन नूर-मकान का खावंद, जाको नामै नूर-जलाल।
आवत दायम दीदार को, जित अर्स नूर-जमाल।।६० ।।

इस अक्षरधाम के मालिक को कुरान में नूर-जलाल कहते हैं। वह परमधाम में नूर-जमाल श्री राजजी महाराज के दर्शन के लिए रोज आते-जाते हैं।

दई साख रसूल अल्लाह ने, ना पोहोंचे जबराईल इत।
कहे पर जलें तजल्ली से, ताथें जोए ना उलंघत।।६१ ।।

रसूल साहब ने गवाही दी कि जबराईल भी परमधाम नहीं जा सकता। वह कहता है कि पारब्रह्म के तेज से उसके पंख जलते हैं, अर्थात् तेज सहन नहीं कर पाता, इसलिए वह जमुनाजी को पार नहीं कर पाता।

इन अर्स नूर जमाल के, हादी रूहें इन दरगाह माहें।
रूहें इन कदम तले, और ठौर ना कोई क्याहें।।६२ ।।

ऐसे श्री राजजी महाराज के इस परमधाम में श्यामा महारानी और रूहें चरणों के तले रहती हैं और कोई ठिकाना उनके लिए नहीं है।

Nijanand App

नूर-जलाल दीदार बाहेर से, करके पीछे फिरत।
नूर-जमाल के कदमों, बड़ीरूह रूहें बसत।। ६३ ।।

अक्षर ब्रह्म भी बाहर (चांदनी चौक) से दर्शन करके वापस लौट जाते हैं। श्री राजजी के चरणों में श्यामा महारानी और रूहें बैठी हैं।

ए ना खबर नूर जलाल को, सुख नूर जमाल कदम।
इन बातों सब बेसक करी, मोहे रूह-अल्ला इलम।। ६४ ।।

अक्षर ब्रह्म को यह ज्ञान नहीं है कि श्री राजजी महाराज के चरणों में कितना आनन्द है। श्री श्यामा महारानी के तारतम ज्ञान ने इन सब बातों की पहचान करा दी।

हादी रूहों को खेल देखाइया, देख्या बैठे तले कदम।
और न कोई केहे सके, बिना निसबत खसम।। ६५ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने चरणों के तले बिठाकर श्यामा महारानी और रूहों को खेल दिखाया। धनी की इस बात को उनकी अंगना के बिना कोई और नहीं कह सकता।

मोहे इन इलमें बेसक करी, सक न जरा इलम।
दई बेसकी सबन को, ठौर नहीं बिना तेरे कदम।। ६६ ।।

हे धनी! आपकी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी ने हम सबके सब संशय मिटा दिए और दृढ़ कर दिया कि हम ब्रह्मसृष्टियों का ठिकाना आपके चरणों के बिना कहीं नहीं है और आपका इलम ही बेशक है।

रूहें बारे हजार नूर बड़ीरूह के, बड़ी रूह नूर खसम।
ए ठौर बेसक देखिया, बिना नहीं तले तेरे कदम।। ६७ ।।

बड़ी रूह श्यामा महारानीजी के अंग हम बारह हजार रूहें हैं और श्यामा महारानी आपके अंग हैं। हमारा ठिकाना आपके चरणों के तले ही है। अन्य कोई ठिकाना नहीं है।

फेर फेर दई ए बेसकी, याही वास्ते भेज्या इलम।
जाने जिन भूलें रूहें खेल में, याद देने हक कदम।। ६८ ।।

आपने अपने चरणों की याद दिलाने के वास्ते ही जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान भेजा और दृढ़ता दी जिससे रूहें खेल में जाकर भूल न जाएं।

ए हादी रूहें इन कदम तले, जिनको कहे मोमिन।
फुरमान इसारतें रमूजें, आई कुन्जी ऊपर इन।। ६९ ।।

श्री श्यामाजी की रूहें आपके चरणों के तले बैठी हैं। इनको मोमिन कहते हैं। कुरान में जो इशारतें और रमूजे हैं इन्हीं के वास्ते आई हैं। इन्हीं के लिए जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम कुंजी आई है।

कुंजी हाथ रूह-अल्ला, और रसूल हाथ फुरमान।
भेजे इमाम पे खेल में, सो हादी रूहों लिए निसान।। ७० ।।

श्यामा महारानीजी के हाथ से तारतम ज्ञान भेजा और रसूल साहब के हाथ कुरान भेजा। इमाम मेंहेदी श्री प्राणनाथजी को दोनों सौंप दिए। अब श्री प्राणनाथजी ने रूहों को उन निशानियों को समझाया जो कुरान में लिखी हैं।

Nijanand App

नासूत में बैठाए के, भेज्या बेसक इलम।
एक जरे जेती सक ना रही, बैठी बेसक तले कदम।।७१ ।।

इस झूठे संसार मृत्युलोक में बिठाकर जागृत बुद्धि की तारतम वाणी भेज दी। जिससे इस बात का जरा भी संशय नहीं रहा कि हम श्री राजजी महाराज के चरणों तले बैठे हैं।

ए सक हमको तो मिटी, जो हम बैठे तले कदम।
फरामोसी हम को मिटावने, भेज्या तुम अपना इलम।।७२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हम चरणों तले बैठे हैं, इसलिए हमारे संशय मिटे हैं। हमारी बेहोशी को मिटाने के वास्ते ही आपने जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान को भेजा है।

आया फुरमान खेल देखावने, और आया हक इलम।
ए खेल नीके तब देखिया, जब देख्या बैठे तले कदम।।७३ ।।

खेल को दिखाने के वास्ते श्री राजजी की जागृत बुद्धि का ज्ञान और कुरान आया। जब हमने समझ लिया कि हम आपके चरणों के तले बैठे हैं, तभी हमने खेल को अच्छी तरह से देखा।

तुम मोहे ऐसा देखाइया, एक वाहेदत में हैं हम।
दूजा कछुए है नहीं, बिना तुम तले कदम।।७४ ।।

आपने मुझे ऐसी जानकारी दे दी कि हम और आप परमधाम में एक ही तन हैं। आपके चरणों के बिना और कुछ है ही नहीं।

ए भी इलम तुम दिया, जासों तुम हुए मुकरर।
दिल सो रूहों विचारिया, कछू है ना वाहेदत बिगर।।७५ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से यह सुध आ गई कि आप सदा अखंड हैं। हम रूहों ने भी दिल से विचार किया कि आपके चरणों के सिवाय और कहीं कुछ नहीं है।

ए तेहेकीक तुम कर दिया, तुम बिना कछुए नाहें।
ए भी तुम कहावत, इत मैं न आवत मुझ माहें।।७६ ।।

यह भी आपने निश्चित कर दिया कि आपके बिना कुछ नहीं है। यह भी आप ही कहलवा रहे हैं इसमें मेरा 'मैं' (अहं) कुछ नहीं है।

ए जिन बिध हक बोलावत, तिन बिध रूह बोलत।
हम बैठे तले कदम के, ए हम पे हक कहावत।।७७ ।।

जिस तरह से हे धनी! आप बुलवाते हैं उसी तरह से मेरी आत्मा बोलती है। आपके चरणों तले बैठे हैं। यह भी आप ही कहलवा रहे हैं।

अनजानत को इलमें, बेसक दिए देखाए।
कदमों नूरजमाल के, हम सब रूहें लई बैठाए।।७८ ।।

हम तो अनजान थे। आपके जागृत बुद्धि के इलम ने ही सब कुछ दिखाकर बेशक कर दिया। धनी! आपके चरणों के तले हमको बिठा दिया।

Nijanand App

तुम बैठाए बैठत हों, मुझ में नहीं ताकत।
बैठी कदम तले हक, ए भी तुम कहावत।।७९ ।।

अब आपके बिठाने से ही मैं बैठती हूं। मेरी ताकत कुछ नहीं है। आपके चरणों तले बैठी हूं। यह भी आप ही कहलवाते हो।

महामत कहे मेहेबूब जी, कोई रह्या न और उदम।
बेसक और काहूं नहीं, बिना तेरे तले कदम।।८० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे प्रीतम! अब मेरे लिए और कोई प्रयत्न (उपाय) नहीं है। आपके चरणों के तले निडरता के साथ बैठ जाने के सिवाय और कोई ठिकाना नहीं है।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ५२२ ।।

हक रूहन की खिलवत

खिलवत हक रूहन की, जो इस्क रूहों असल।
ए बातून बका अर्स की, बीच न आवे फना अकल।। १ ।।

श्री राजजी महाराज की और रूहों की मूल बैठक में ही रूहों का सच्चा प्रेम है। यह अखण्ड घर की बातूनी (छिपी) बातें हैं। यह संसार के मिट जाने वाले जीवों की अकल में नहीं आ सकतीं।

रूहें बड़ी रूह सों मिल के, बहस किया हकसों।
हम तुमारे आसिक, इस्क है हम मों।। २ ।।

बड़ी रूह श्यामा महारानी और रूहों ने मिलकर श्री राजजी से बहस की कि हम आपके आशिक हैं। हमारे अन्दर पूर्ण इश्क है।

बड़ी रूह कहे तुम सांची सबे, पर इस्क मेरा काम।
अव्वल हक और रूहन सों, इन इस्कै में मेरा आराम।। ३ ।।

श्री श्यामाजी कहती हैं, हे रूहो! तुम सत्य कह रही हो, परन्तु इश्क तो मेरा काम ही है। पहले श्री राजजी महाराज से इश्क लेना और फिर रूहों को इश्क देना। इसी में मुझे सुख चैन मिलता है।

फेर जवाब रूहन को, इन विध दिया हक।
इस्क तुमारा भले है, पर मैं तुमारा आसिक।। ४ ।।

फिर श्री राजजी महाराज ने रूहों को उत्तर दिया कि भले तुम मुझे इश्क करती हो, पर आशिक तुम्हारा मैं हूं।

हक आसिक बड़ीरूह का, और रूहों का आसिक।
ए क्यों कहिए सीधा इस्क, बंदों का आसिक हक।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज बड़ी रूह श्यामा महारानी और रूहों के आशिक हैं। इस बात को सीधा कैसे कह दिया जाए कि श्री राजजी महाराज अपनी अंगनाओं के आशिक हैं?

रूहें चाहिए आसिक हक के, और आसिक बड़ीरूह के।
और बड़ीरूह भी आसिक हक की, सीधा इस्क बेवरा ए।। ६ ।।

रूहों को श्री राजजी महाराज और श्यामाजी दोनों के आशिक होना चाहिए। श्यामाजी को भी श्री राजजी के आशिक होना चाहिए। इश्क का सीधा फैसला तो यही है।

Nijanand App